

आसो सुष्ट १०, शुक्रवार ता. १५-१०-१९६४
श्री तारणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-१८३,
१८४, १८९, १९५, १९८, प्रथम-२०

... समझमें आया? ... ऐसा करते हैं. पहली चीज आत्मा ध्यान करने लायक क्या चीज है और ध्यान क्या चीज है, ध्याता कौन है और ध्यानका इव क्या है और पर्याय अवं द्रव्य क्या चीज है, ऐसी पहली समझ बिना, यथार्थ निर्णय बिना, सम्यग्दर्शन बिना ऐसा ध्यान होता नहीं. कलो, समझमें आया? करते हैं, देजो! १८३.

पिंडस्थ ज्ञान पिंडस्य, स्वात्म चिंता सदा बुद्धै
निरोधं असत्य भावस्य, उत्पाद्यं सास्वतं पदं॥१८३॥

दूसरा श्लोक.

आत्मा सद्भाव आरक्तं, पर द्रव्यं न चिंतव्ये।
ज्ञान मयो ज्ञान पिंडस्य, चेतयंति सदा बुद्धै॥१८४॥

पिंडस्थ ध्यान.. पहला शब्द है न अन्वयार्थमें? पिंड नाम शरीर. उसमें स्थ नाम रहा हुआ. आत्मा शरीरमें रहा हुआ, उसका ध्यान करना उसका नाम पिंडस्थ ध्यान है. नाम सुने नहीं हो. ये श्रावकको करते हैं, पंडितज्ज! संसारका आर्तध्यान और रौद्रध्यान करते हैं कि नहीं? ये व्यापार-धंधा आदि क्या है? आर्तध्यान है कि नहीं? आर्तध्यान-आर्तध्यान है, पापध्यान है. व्यापार-धंधा आदिका परिणाम आर्तध्यान-पापध्यान है. पापमें अेकाग्रता है न.

श्रावक उसको करते हैं और श्रावकका आचार, उसकी पर्यायमें आचार. पर्यायमें-अवस्थामें-कैसा होता है? पहले आत्मा क्या चीज है, सर्वज्ञ क्या करते हैं? देखसे भिन्न पिंडस्थं. पिंड नाम शरीर, उसमें रहा हुआ भगवान आत्मा. कलो, समझमें आया? 'पिंडस्थ ज्ञान पिंडस्य'. शरीर पिंडमें रहा हुआ मैं अकेला ज्ञानका पिंड हूं. पिंडको क्या करते हैं? तुम्हारी भाषामें (क्या) करते हैं? पिंड करते हैं. ऐसा लड्डुका पिंड होता है न? जैसे आत्मा.. अनंत आत्मा अनंत भिन्न-भिन्न. मेरा आत्मा कैसा है, यहां ध्यान करनेके लायक है? देजो! यहां पंचम गुणस्थानमें ध्यान करने लायक कला है. वे लोग करते हैं, चौथे-पांचवेंमें कुछ नहीं होता. वह तो आगे मुनिको सातवें (गुणस्थानमें) होता है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- छेमें भी नहीं होता.

भाई! देजो! तारणस्वामी क्या करते हैं? पहले आत्मा श्रावक उसको कलना कि अपना आत्मा देखका रणकण, कर्मका अस्तित्व है, लेकिन उससे मैं भिन्न हूं. और पर्यायमें पुण्य-

पापका, दया, दान, व्रत, काम, क्रोधका राग होता है, उससे भी मैं भिन्न हूँ. और मेरा अंतर अनंत ज्ञान, दर्शन, शांति आदि स्वभावसे मैं अभिन्न हूँ. जैसा पहले निर्णयमें सम्यग्दर्शन होना चाहिए. समझमें आया? और सम्यग्दर्शन बिना जैसा ध्यान होता नहीं. श्रावकाचार सम्यग्दर्शन बिना होता नहीं. क्या कदा? देओ!

पिंडस्थ ध्यान 'ज्ञान पिंडस्थ' ज्ञान समूह रूप आत्माका ध्यान है. 'ज्ञान पिंडस्थ' दूसरा शब्द पडा है न? 'ज्ञान पिंडस्थ'. अकेला चैतन्यपुंज मैं हूँ. अनंत गुणमय हूँ. उसके साथ अविनाभावी, चैतन्यके साथ अनंत गुण हैं. वह मैं ही भगवान हूँ. शरीरमें बिराजमान मैं पिंडस्थ परमात्मा हूँ. बहुत जम्मेदारी. ये तो श्रावक हो गया, लो! समझे बिना श्रावककी किया थोड़ी करे, जैसा करे, वह श्रावक नहीं है. यहां श्रावकाचारका वर्णन है.

मुमुक्षु :- जैनकुलमें..

उत्तर :- जैनकुलमें जन्मा ईसलिये जैन हो गया, लो!

पहले चीज क्या है? भगवान सर्वज्ञ परमात्मा वीतरागदेव किसको आत्मा कहते हैं? कैसा आत्मा है? कितनी शक्ति अंदर है? शक्ति गुण है, शक्तिवान द्रव्य है, और ये ध्यान उसकी पर्याय है. ध्यान उसकी पर्याय है. समझमें आया? ध्यानकी दशाको पर्याय कहते हैं. वह पर्याय किसमें स्थित होनेसे ध्यान होता है? कि 'ज्ञान पिंडस्थ'. ज्ञानका पिंड अनंत गुणका स्वरूप मेरा स्वभाव, मेरा धाम चैतन्य. 'ज्यां चैतन्य त्यां अनंत गुण, केवणी बोले जेम.' भगवानकी वाणीमें आया, जहां चैतन्य है, वहां अनंत गुण अंदर धाममें बिराजमान है. जैसा पहले दृष्टिमें, दर्शनमें निर्णय किया हुआ हो, उसके बाद 'ज्ञान पिंडस्थ' ध्यान करता है. ओहोहो..! देओ! ये ध्यान करना श्रावकका आचार (है).

वे लोग कहते हैं, षट् कर्म. भगवानके दर्शन करना, गुरुकी सेवा करना.. जैसे षट् कर्म आते हैं न? वह तो विकल्प है, वह तो राग है. वह श्रावकका आचार नहीं. वह तो, ये निश्चय आचार हो तो विकल्पको व्यवहार आचार कहनेमें आता है. ये निश्चय आचार नहीं हो, अकेला विकल्प आचार हो तो उसको व्यवहार आचार भी नहीं कहनेमें आता. डालखंडज! यहां थोडा समझना पड़ेगा, हां! यहां कुरसद लेकर आये हैं न. दिवाली आयेगी तो वापस जायेंगे. नर्म ईन्सान है.

मुमुक्षु :- .. निकालके करना चाहिए.

उत्तर :- आवश्यक नाम अवश्य करना चाहिए, जरूर करने लायक. श्रावकको जरूर करने लायक उसका नाम आवश्यक है. षट् आवश्यक तो विकल्पवाला शुभराग है. पंडितज! निश्चय आवश्यक हो उसको षट् आवश्यक व्यवहारसे कहनेमें आता है.

मुमुक्षु :- ये परम आवश्यक हो गया.

उत्तर :- ये परम आवश्यक है. ठीक कहते हैं. कहां, समझमें आया?

कहते हैं, ज्ञान समूह. ओहोहो..! अक समयका ज्ञान पूर्ण.. पूर्ण.. पूर्ण.. पूर्ण.. पूर्ण.. अचिंत्य स्वभाव वह मैं, मेरा स्वभाव पूर्ण ज्ञान हूँ. बुद्धि-बुद्धिमानोंके द्वारा, देओ! बुद्धिमान क्यों लिया? ज्ञानी द्वारा. अज्ञानी द्वारा ऐसा ध्यान होता नहीं. श्रावक हुआ है, सम्यग्दृष्टि हुआ है तो वह शब्द लिया है. है न? बुद्धि. बुद्धि शब्द लेनेका कारण है कि श्रावक सम्यग्दृष्टि है. आत्माका रागसे, परसे, शरीरसे पूर्णानंद स्वरूप भिन्न है, ऐसा भान हुआ है. उसको यहां बुद्धि-ज्ञानी कहनेमें आया है.

ये बुद्धि-बुद्धिमानो, उसको बुद्धिमान कहते हैं. अपना आत्मा ज्ञानमें, दर्शनमें, प्रतीतमें लिया है, उसको यहां बुद्धिमान कहते हैं. दूसरी बुद्धिको यहां बुद्धिमान कहते नहीं. ...यंदं! सदा. देओ! निरंतर, निरंतर. अंतर स्वरूप में विकल्प रहित, राग रहित, भेद रहित मन, वाणी, देहके संग रहित पूर्ण शुद्ध हूँ, ऐसा पहले ज्ञान, सम्यग्दर्शन तो हुआ है, बादमें निरंतर स्वात्म चिंता-अपने आत्माका ध्यान करना योग्य है. आत्मा वह तो द्रव्य पूर्ण शुद्ध हुआ. और चिंता वह ध्यान हुआ, वह पर्याय हुई. समझमें आया? चिंता यानी विकल्पकी बात यहां नहीं है. चिंताका अर्थ यहां विकल्प नहीं है. आत्मा अक समयमें पूर्ण स्वरूप, उसका ध्यान उसका नाम यहां चिंता कहनेमें आया है. अभी तो वस्तु समझमें आयी नहीं तो ध्यान किसका करे? समझमें आया? फिर जैसे ही बैठकर, ओम, ओम, ओम, एमो अरिहंताएं.. सामायिक... तत्त्वेषु मैत्री, गुणेषु प्रमोदं.. वह सामायिक. वह सामायिक नहीं है. सामायिक तो पहले अपना स्वरूप अनुभवमें सम्यग्दर्शनमें आया हो, बादमें ध्यान करते हैं तो उसको सामायिक होती है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- उपयोग लगा, विकल्पमें लगे. कहां लगे? सामायिक वी है. गाथा-३१४में सामायिक लिया है. ३१४ है. मिथ्या सामायिककी बात की है, देओ!

अनेक पाठ पठनंते, वंदना श्रुत भावना।

सुद्ध तत्त्वं न जानंते, सामायिक मिथ्या उच्यते।।३१४।।

पंडितं! पढते नहीं, दरकार करते नहीं और जैसे ही जवन यवा जाये और (माने कि) हम धर्म करते हैं. ये कहते हैं, देओ! 'अनेक पाठ पठनंते' अनेक पाठोंका पढना वह भी विकल्प है. 'वंदना श्रुत भावना'. भगवानकी वंदना करना, गुरुकी वंदना करना, शास्त्रकी भावना करना, ये सब विकल्प है, राग है. यदि 'सुद्ध तत्त्वं न जानंते', ऐसा करने पर भी, शास्त्र पढने पर भी और वंदना, शास्त्रकी शुद्ध भावना-आरंभार वांचन करने पर भी 'सुद्ध तत्त्वं न जानंते' शुद्ध ज्ञानानंद मेरे स्वरूपमें अनंत गुण भरे हैं, मैं ही परमात्म स्वरूपसे भरा हूँ, ऐसा शुद्ध तत्त्वका ज्ञान नहीं है तो वह सामायिक मिथ्या कहलाती है. है? समझमें आया? सामायिक करते हैं. किसकी सामायिक? तुझे अभी तत्त्वकी तो जबर

नहीं. मिथ्या सामायिक है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- वल तो अनादिसे करता है. समजमें आया? देओ! तारणस्वामी क्या कलते हैं, मालूम नहीं. और मैं तारणस्वामीमें आ गया, तारणस्वामीमें आ गया. लेकिन क्या कलते हैं मालूम नहीं. बराबर है कि नहीं?

कलते हैं कि तेरी थीज 'सुद्ध तत्त्वं न जानंते'. भगवान आत्मा मैं पवित्र ज्ञान, आनंद शुद्ध निर्विकल्प परमात्मा हूं. पर्यायमें मेरी दशा लले मलिन हो, लेकिन मेरा स्वभाव मलिन नहीं. ऐसा अनुभव दृष्टिमें आया, ऐसा शुद्ध तत्त्व यदि ज्ञानमें नहीं आया, विचारमें नहीं आया, प्रतीतमें नहीं आया, दर्शनमें नहीं आया, वल सामायिक करने बैठता है (तो) वल 'सामायिक मिथ्या उच्यते'. वल सामायिक मिथ्यादृष्टिकी मिथ्या है. सामायिक है नहीं. समजमें आया? बहुत बात की है. यहां तो सामायिक याद आ गयी.

देओ, यहां चलते अधिकारमें क्या कलते हैं? 'स्वात्म चिंता'. चिंताका अर्थ यहां विकल्प नहीं है. स्वरूप पूर्ण ज्ञान, आनंद जो पलले निर्णय सम्यक्में हुआ है, वल आत्माके जुकावमें अपनी पर्यायमें द्रव्य की ओर जुकाव, ध्यान. असत्य भावसे निरोध. देओ! क्या कलते हैं? अक तो स्वात्मा ध्रुव त्रिकावी ज्ञायकभाव अनंत गुणका पिंड. देओ! ठसमें तीन ओल लेते हैं. उत्पाद-व्यय-ध्रुव तीनों लेते हैं. क्या कलते हैं? ध्रुव स्वात्मा ज्ञायक त्रिकाव अनंत गुणका पिंड. चिंता वल पर्याय है-उत्पाद. उसको विशेष कलते हैं. असत्य भावसे निरोध. विपरीत राग और द्वेषादि भावका व्यय. समजमें आया? पुण्य और पापका विकल्प राग है, उसका व्यय. और 'उत्पाद्यं सास्वतं पदं'. अविनाशी मोक्षपद पाना योग्य है. वल उत्पाद. अक गाथामें उत्पाद-व्यय-ध्रुव तीनों ले लिये हैं. समजमें आया? जैनदर्शनके सिवाय तीन कालमें कहीं हो सकता नहीं. दूसरेके साथ मिलान करते हैं, लो, यहां है. तारणस्वामीने कला है, इलानेने कला, ढीकनाने कला. ये तो जिनाज्ञा अनुसार जिनागाम अनुसार अक-अक शब्द है. समजमें आया? दूसरी जगल, दूसरेके साथ मिलान करे कि ... है, इलाने के साथ है, उसके साथ है,.. वल तत्त्वका अन्याय करता है. समजमें आया?

क्या कला? देओ! अक तो आत्मा वस्तु, उसका ध्यान करके पर्याय उत्पन्न हुई. अब क्या कलते हैं? असत्य भाव पुण्य-पापका विकल्प उत्पन्न नहीं होता है, व्यय होता है. और वल ध्यान करके क्या हो जाता है? 'उत्पाद्यं सास्वतं पदं'. निर्मल पर्याय उत्पन्न होकर केवलज्ञान उत्पन्न होता है. ये केवलज्ञान उत्पाद पर्याय है. समजमें आया? वस्तु त्रिकावी है, उसकी ध्यान पर्याय निर्मल है, ये करते-करते विकारका व्यय हो जाता है और केवलज्ञान मोक्षपर्यायका उत्पाद होता है. उत्पाद-व्यय-ध्रुव युक्तं सत्, अक गाथामें तीनों सिद्ध किये. समजमें आया? अपने आप पढे तो कुछ समजमें आये ऐसा नहीं है. ऐसे

ही तुंबडीमें कंकर लगे. सेठ! समजनेकी चीज क्या है, सर्वज्ञ आज्ञा अनुसार, जिनागम अनुसार आत्मा किसको कहते हैं, उसका उत्पाद-व्यय-ध्रुव कैसा है, जैसा समझे बिना उसका अर्थ यथार्थ होता नहीं. समजमें आया?

अविनाशी भोक्त्रपद पाना योग्य है, हेओ! 'आत्मा सद्भाव आरक्तं' अपने सत् स्वभावमें लीवलीन हो जावे. ये तो श्रावकाचारमें कहा है. आहा..! अपना आत्मा ध्यानके कालमें अपने स्वभावमें आरक्त-आरक्त, आ-समस्त प्रकारसे लीन हो जाये. वह पर्याय दुर्लभ. 'पर द्रव्यं न चिंतव्ये'. परद्रव्यकी चिंता भिन्न जावे. अरिहंत, अरिहंत, सिद्ध, सिद्ध, ओम, ओम ये सब परद्रव्य हैं. ओम, ओम, ओम.. ये सब तो विकल्प है, परद्रव्य है. अरिहंत है, अरिहंतका ध्यान, अरिहंतका ध्यान, अरिहंत-सिद्ध परद्रव्य हैं. भगवानका समवसरण परद्रव्य है. पंच परमेष्ठी आत्मासे परद्रव्य भिन्न हैं. समजमें आया? तो 'पर द्रव्यं न चिंतव्ये'. बड़ी बात भाई! श्रावकके लिये जैसी जिम्मेदारी!

मुमुक्षु :- 'पर द्रव्यं न चिंतव्ये' तो धर्म कब होगा?

उत्तर :- धर्म कब होगा? धूलमें शरीरसे धर्म होता है? शरीरकी क्रियासे धर्म तो नहीं, दया, दानका विकल्प आता है, ओम.. ओम.. ओम.. वह विकल्प है, उससे भी धर्म नहीं है. वह तो राग है. समजमें आया?

'पर द्रव्यं न चिंतव्ये' परद्रव्यका राग-विकल्प नहीं करना. जैसे अरिहंत हैं, जैसे सिद्ध हैं, जैसे पंच परमेष्ठी हैं, जैसे गुरु हैं और जैसा शास्त्र है, वह सब परद्रव्य है. देव-गुरु-शास्त्र भी आत्मासे परद्रव्य है. वाणी भी आत्मासे परद्रव्य है. तो कहते हैं, 'पर द्रव्यं न चिंतव्ये'. बड़ी बात, भाई! ज्ञानमें-समजमें यह बात न ले, उसका अनुभव और दृष्टि कहां-से हो? और ध्यान तो कहां-से हो? ज्याव भी नहीं है चीजका. परद्रव्य-परद्रव्यकी चिंता भिन्न जावे. परद्रव्यकी चिंताका अर्थ, वह तो लंबी (बात है). लेकिन 'पर द्रव्यं न चिंतव्ये' जैसा लिया है. अपने सिवाय कोई भी स्त्री, कुटुंब, परिवार या देव-गुरु-शास्त्र परद्रव्यका विकल्प नहीं किया जावे, बुद्धि-पंडितोंके द्वारा. कहां, समजमें आया?

वह शब्द पडा है, भाई! पहलेमें भी 'सदा बुद्धै' था. १८४में भी 'सदा बुद्धै' अंतिम पदमें है. उसमें प्रथम पंक्तिमें था. जैसा कहनेका कारण क्या है? पंडितों द्वारा. पंडितोंका अर्थ पढा-लिखा है, जैसा नहीं. बुद्धिका अर्थ किया. आत्मा और उसकी शक्तियां अंतरमें क्या है, उसका भान हुआ उसका नाम यहां पंडित कहनेमें आया है. पहले कहा था न? 'सदा बुद्धै'? यहां भी 'सदा बुद्धै' (कहा है). लोगोंको बहुत .. लगे. समजमें आया?

बुद्धि-ज्ञानियों द्वारा. वास्तवमें तो बुद्धिका अर्थ यह है-ज्ञानियों द्वारा. सम्यग्ज्ञानी द्वारा. अपने स्वभावका बोध-भान हुआ है, जैसा सम्यग्ज्ञानीयों द्वारा 'ज्ञान मयो ज्ञान पिंडस्य चेतयंति'. ज्ञानमय ज्ञानधन आत्माका ही चिंतवन है. समजमें आया? 'ज्ञान पिंडस्य'

कहा न? उसका अर्थ धन किया. ज्ञानमयी. 'तना शब्द है न? 'ज्ञान मयो ज्ञान पिंडस्य'. १८४. ज्ञानमय ज्ञानधन. ज्ञानमय-अकेला ज्ञानका धन पुंज है. ऐसा आत्मा, उसका चिंतवन नाम अकाग्रता अंतरमें पर्यायसे लीन होना, उसका नाम श्रावकाचारका ध्यान कलनेमें आता है. कलो, समझमें आया? १८६. वह भी दो (गाथाओं) हैं. इपातीतकी बात है. समझमें आया? अब इपातीत ध्यान. श्रुतज्ञानके आधारसे अरिहंतका ... शुद्ध आत्माका स्वरूप विचार करे. ये तो व्यवहार है. यहां तो अंदरके निश्चयकी बात की है.

रूपातीत व्यक्त रूपेण, निरंजनं ज्ञानमयं ध्रुवं।

मति श्रुत अवधि दिस्टा, मनपर्यय केवलं ध्रुवं॥१८८॥

अनंत दर्शन ज्ञानं, वीर्य अनंत सौख्यं।

सर्वज्ञं सुद्ध द्रव्यार्थं, सुद्धं सम्यक्दर्शनं॥१८९॥

इपातीत ध्यान. मूर्तिक रहित, राग रहित अपना स्वरूप इपातीत सिद्ध समान. सिद्ध समान अपने स्वरूपको यहां इपातीत कलनेमें आया है. 'रूपातीत'-रूप रहित 'व्यक्त रूपेण'. प्रगट्रूपसे जैसा सिद्ध है प्रगट्रूपसे, वैसा ही मैं हूँ.

मुमुक्षु :- कब?

उत्तर :- अभी. कब क्या. समझमें आया? शक्तिरूपमें तो अनंत दर्शन, ज्ञान आदि जितने शुद्ध गुण हैं, वह मेरी शक्तिमें पडे हैं. मैं परिपूर्ण आठ गुणोंसे अलंकृत (हूँ). आता है न? भाई! नियमसार. नियमसारमें आता है न? आठ गुण. पर्याय न? ... अपने आत्मामें अंदर पेटमें, अंतर पेटमें ज्ञानके उदरमें, शक्तिके उदरमें आठ गुण, जैसे सिद्ध हैं, वैसे मेरेमें पडे हैं. समझमें आया? ये तो जैनमें जन्म लिया, जैन परमेश्वर क्या करते हैं और क्या गुरु करते हैं, क्या शास्त्र करते हैं, भगवान ज्ञाने. भगवान तो ज्ञानते ही है न.

कलते हैं, इपातीत ध्यान प्रगट रूपसे सर्व मैलसे रहित. कलो, समझमें आया? कर्म-कर्म उसमें है नहीं, ऐसा मैं आत्मा (हूँ), मेरा कर्मसे संबंध है नहीं. वर्तमानमें कर्मका संबंध है नहीं. शरीर, कर्मसे संबंध है ही नहीं. पर्यायमें निमित्त-नैमित्तिक संबंध है. न हो तो संबंध रहित दृष्टि होती नहीं. संबंध है, मेरे स्वभावके साथ संबंध नहीं है. व्यवहार हो गया. व्यवहारका निषेध किया. कर्म मैलसे रहित, 'ज्ञानमयं ध्रुवं'. मैं तो ज्ञानस्वरूप अविनाशी आत्मा होता है, मैं अविनाशी आत्मा हूँ. कलो, समझमें आया? जहां मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवल.. देओ! तारुणस्वामीने ज्ञानकी पांच पर्याय ली है. आत्मा त्रिकाव है-द्रव्य, उसमें ज्ञानगुण त्रिकाव है, वह शक्ति, उसकी पांच पर्याय है वह अवस्था. द्रव्य, गुण और पर्याय तीनों ले लिये हैं. आत्मा वस्तु है, वह द्रव्य त्रिकाव. उसमें अनंत शक्तियां. उसमें ज्ञानगुण है. वह गुण ध्रुव शक्ति है. उसकी पर्याय, ज्ञानगुणकी पांच पर्याय

है. पर्याय समझते हो? डालयंदण्ड! पर्याय-अवस्था. जैसे सोनेकी डल्ली होती है, फिर कुंडल-कडा ऐसी अवस्था होती है. जैसे आत्मा वस्तु (है), ज्ञानस्वभाव त्रिकाव ध्रुव गुण, और वर्तमान उसकी मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवल ये पांच पर्याय (है). ऐसा आत्मा ज्ञानकर,... क्या कहते हैं? देओ!

ये पांचों अेकड़प नित्य टिभवाँ पडते हैं. पांचमें भेद नहीं देभना. भाँ! निर्जराकी गाथा है न? २०४. वह शैली है. मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय.. ये शैली है. मूल तो समयसारमेंसे (यही आयी है). २०४ गाथा है न? पांच पर्याय नहीं देभना. पांच पर्याय अेक को अभिनंदन करती है. आता है न? निर्जरा अधिकारमें आता है. वैसे आत्मा... पांच पर्याय पर भेद पर लक्ष्य नहीं करना. ओलोलो..! कठिन बात, भाँ! समझमें आया? पांच भेद होनेपर भी त्रिकाव ज्ञायक स्वभावमें अेकाग्र होनेसे पांचका भेद मालूम नहीं होता. पांचों अभेदको अभिनंदन करते हैं. स्वभाव ओरकी अेकताको पांच होनेपर भी अभेदको अभिनंदते हैं. आलाला..! कठिन बात. पाठ लिया न? 'मति श्रुत अवधि दिस्टा, मनपर्यय केवलं ध्रुवं'. है. लेकिन अेकड़प टिभवाँ पडता है. पांच भेद नहीं. स्वड़पकी दृष्टि करनेसे और अंतर्मुख ध्यान करनेसे पांच पर्यायका भेद नहीं टिभता. है सही. समझमें आया? होने पर भी वहां पर्यायदृष्टि नहीं है. वस्तु पर दृष्टि है तो पांच पर्यायका लक्ष्य नहीं करके अभेद ध्रुव अकेला आत्मा देभते हैं. उसमें दृष्टि लगाना. उसका नाम श्रावक आचारका धर्मध्यान कहनेमें आया है. समझमें आया?

अनंत दर्शन. देओ! पर्यायभेद लिया? नहीं. अंदरमें देओ क्या? अनंत दर्शन. वस्तु भेद ज्ञानस्वरूप ध्रुव (है). ये तो कथन करना है न. बाकी अनंत ज्ञान और दर्शन, ऐसा भेद भी अंदर नहीं है. समझमें आया? समझनेमें क्या कहे? समझनेकी भाषा ऐसी है. तो कहते हैं कि पांच पर्यायका ध्यान (नहीं), अेकड़प देभना. अेकड़पमें अंदर क्या है? अनंतज्ञान. पहले अनंतदर्शन लिया है. अनंत दृष्टि शक्ति आत्मामें अेकड़प ध्रुव पडी है. अनंतज्ञान. दर्शन है अभेद है. अभेदका मतलब वह स्व-परको भिन्न नहीं ज्ञानता. अेकड़प देभता है. ऐसी शक्ति आत्मामें है. ज्ञानका अर्थ प्रतिच्छिद है. परिच्छिन्न. प्रत्येक द्रव्य, गुण, पर्यायको भिन्न-भिन्न करके ज्ञाने उसका नाम ज्ञान. दर्शन कोई द्रव्य-गुणका भेद नहीं करके सामान्य सत्ता अवलोकन उपयोगको दर्शन कहते हैं. ज्ञान भिन्न-भिन्न ज्ञाने. ये द्रव्य है, ये गुण है, ये पर्याय है. भेद नहीं. लेकिन भेद ज्ञाननेका स्वभाव उसका है. ऐसा ज्ञान अनंत ज्ञान भेरेमें पडा है. स्व-परको सबको देभे-ज्ञाने.

अनंत वीर्य. भेरे स्वरूपमें अनंत बल है. शक्ति अनंत वीर्य है. अनंत स्वयत्तुष्टयकी रचना करे ऐसा भेरा सामर्थ्य है. ऐसा द्रव्यका ध्यान करे, वस्तुका ध्यान करे. अपना स्व पदार्थका समकित्तीको निर्णय हुआ है, बादमें ऐसा ध्यान करता है. अनंत सुभय है.

भीजाभाई! इसमें तो बाहरका सब छूट जाता है. आह्ला..! ... क्लो, समझमें आया? ये बात भीठी लगे. निश्चयकी है न. .. लगता है? ये तो अकेली वीतरागी दृष्टि, वीतरागी ज्ञान और वीतरागी ध्यान.

कहते हैं, इपातीत ध्यान करनेवाला कैसा होता है? .. वर्णन किया है. कोई कहता है, मुनिके आचारमें उपरके शुक्लध्यानकी बात है, ऐसा नहीं. डालयंछ! देभोन, ईसीविये तो श्रावकाचार लिया है. पहले यह लो, बादमें ज्ञान समुच्चय सार, उपदेश शुद्ध सार पीछे-पीछे आयेगा. बहुत समय हो गया न. थोडा उसमेंसे ले ले. श्रावका आचार. पंचम गुणस्थानका निश्चय सत्य आचार क्या है? उसका वर्णन है. आचार पर्याय है. श्रावकाचारकी पर्याय है, द्रव्य-गुण त्रिकावी है. त्रिकावी द्रव्य-गुणमें अकाकार सम्यग्दर्शन, ज्ञान लेकर विशेष ध्यान करना वह श्रावका आचार-पर्याय निर्मल निर्विकल्परूप पर्याय श्रावका निश्चय आचार है. बीचमें विकल्प हो, वह व्यवहार है. समझमें आया? शुभराग हो. नाम स्मरण, वाणीका बहुमान, भगवानका बहुमान, पंच परमेष्ठीका .. हो, सब विकल्प है, शुभराग है, पुण्यबंधका कारण है. निश्चय आचार हो तो उसको व्यवहार आचारका आरोप देनेमें आता है. निश्चय यहां नहीं है, तो व्यवहार भी उसको नहीं है. व्यवहाराभास है. समझमें आया?

अब, जैनदर्शन आत्माको सब .. साथ मिलाते हैं. पंडितजी! है? समन्वय. नानक, कबीर, उसे गंध भी कहां थी, क्या द्रव्य है और क्या वस्तु है. छह द्रव्य मालूम थे नानक और कबीरको? अरे..! .. स्थानकवासीमें. उसे कुछ मालूम नहीं. एक संप्रदायकी रीतमें मूर्तिको ... अध्यात्म हो गया? समझमें आया? अभ्यास नहीं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- हां. .. सब बातें.. वैरागी था. वेदांतकी दृष्टि. अद्वैत एक आत्मा. बस. ये चीज क्या है? गंध भी नहीं है. क्या कहते हैं? देभो!

वीर्य अनंत और अनंत सुभ. मेरे आत्मामें जेहद (सुभ भरा है). पहले श्रद्धा करे, हां! विचार करे तबतक भी विकल्प है. लेकिन जैसे आत्मामें अकाग्र होना उसका नाम ध्यान है. पहले विचारमें, मननमें, श्रद्धामें, ज्ञानमें तो ले कि ये चीज ऐसी है. इसके सिवा दूसरी चीज होती नहीं. उससे विद्भकी प्रशंसा, अनुमोदना, संमतपाशा यवा जये. एक आत्मा ऐसा परिपूर्ण परमात्मा मैं ही हूं. मैं ही मेरेमें ध्यान करनेसे मेरे परमात्माकी प्राप्ति होती है. परमात्मा दूसरेका ध्यान करनेसे अपना परमात्मा परमात्मा नहीं होता है. समझमें आया? क्या कला? देभो!

अनंत सुभमय है. अब विशेष लिया. वह सर्वज्ञ है. यह आत्मा सर्वज्ञ है. ओहो..! मैं सर्वज्ञ हूं. द्रव्यमें, हां! पर्यायमें सर्वज्ञ हो तो ध्यान किसका? फिर ध्यान कौन करे? सर्वज्ञको ध्यान होता है? कितनी बात ली है, देभो! एक तो ज्ञानकी पांच पर्याय ली कि पांच

पर्याय द्विभती नहीं, अभेद. ज्ञान, दर्शन, आनंद, वीर्य, सुभ. सर्वज्ञ. सर्वज्ञ है. मेरा आत्मा ही सर्वज्ञ है. सर्वको ज्ञाननेवाला. मेरी शक्ति परको-स्वको पूर्ण तीन काल, तीन लोक अपना त्रिकावी द्रव्य-गुण-पर्याय सबको ज्ञाननेकी शक्ति रखनेवाला सर्वज्ञ मैं. समझमें आया?

शुद्ध सम्यग्दर्शन. शुद्ध आत्मपदार्थ है. ऐसा शुद्ध आत्मपदार्थ है, ऐसा अनुभव दृष्टि करनी यही शुद्ध सम्यग्दर्शन है. है? पंडितजी! 'सुद्ध द्रव्यार्थ, सुद्धं सम्यक्दर्शनं'. ऐसा शुद्ध पदार्थ अेकरूप अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुभ, सर्वज्ञ ऐसी पूर्ण वस्तुमें अनंत शक्ति हैं. ऐसा आत्मा उसकी अंतरमें अनुभव करके प्रतीत-श्रद्धा, अनुभव करना उसका नाम शुद्ध सम्यग्दर्शन है. शुद्धका अर्थ सख्या सम्यग्दर्शन है. शुद्धका अर्थ निश्चय सम्यग्दर्शन है. निश्चयका अर्थ यथार्थ सम्यग्दर्शन है. कल्पित व्यवहार सम्यग्दर्शन वह व्यवहार सम्यग्दर्शन यथार्थ है नहीं. समझमें आया?

निश्चय सम्यग्दर्शन हो वहां व्यवहार उतना राग, देव-गुरुकी श्रद्धा, भगवानकी वाणीकी बहुमानता, ऐसा विकल्प आता है. वह विकल्प है राग, उसको व्यवहार समकित कलना वह उपचारसे कलनेमें आता है. वास्तवमें तो वह सम्यक् ही सम्यग्दर्शन है. सम्यग्दर्शन हो नहीं है, सम्यग्दर्शनका भाव तो वह अेक ही निश्चय सम्यग्दर्शन अेक है. कल, समझमें आया? १८८ लुई न? १८५. देभो! सम्यग्दृष्टिका आचरण. सार-सार गाथा लिख ली है. क्योंकि बीचमें तो... थोडा-थोडा ज्यालमें आ जाये कि क्या तारुणस्वामी कलते हैं और वस्तुकी स्थिति क्या है. अष्टपालुडमें दर्शन पालुडमें है वह बात ली है.

लिंगं च जिन प्रोक्तं, त्रितयं लिंगं जिनागमे।

उत्तम मध्यम जघन्य च, क्रिया त्रितेवन संजुतं।।१९५।।

उत्तम जिन रुचि च, मध्यम च मति श्रुतं।

जघन्य तत्त्व सार्धं च, अविरत सम्यग्दृष्टितं।।१९६।।

देभो! अविरत सम्यग्दृष्टि धतने लिंगको मानते हैं और धतना अनुभव करते हैं, ऐसा कलते हैं.

लिंगं त्रिविधि प्रोक्तं, चतुर्थं लिंगं न उच्यते।

जिन शासने प्रोक्तं च, सम्यग्दृष्टि विशेषतः।।१९७।।

अष्ट पालुडमें कुंडकुंदाचार्यने लिया है वह बात है. देभो! पहला शब्द लिया है, जिनागममें... पहली पंक्तिका दूसरा, वह पहले लिया है. जिनागम. पहला शब्द है न पहली पंक्तिमें. जिनशासन अंतमें आयेगा. जिनागममें वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा त्रिलोकनाथ जैन परमेश्वर, सौ धन्द्रके पूजनिक, उनकी वाणीमें. 'जिन प्रोक्तं' 'जिन प्र उक्तं' जिनेन्द्र भगवानके (द्वारा) कले गये. परमात्मा त्रिलोकनाथ परमेश्वरने कला, 'त्रितयं लिंगं'. लिंग तीन है. उत्तम लिंग, मध्यम लिंग और जघन्य लिंग. तीन लिंग कला, यौथा है नहीं. समझमें आया?

यह यथायोग्य .. क्रियासे संयुक्त होता है. उत्तम विंग जिनेन्द्रका स्वरूप नग्न द्विगंबर. आत्मज्ञान, आत्मध्यान. स्वरूप, हां! अकेला द्रव्यविंग नहीं. यहां कहते हैं जैसे सम्यग्दर्शनका अनुभव और स्वरूपका ध्यान और चारित्र, निर्विकारी आनंदके जुलेमें जुले. पर्यायमें निर्विकार आनंद, द्रव्य-गुण तो ध्रुव त्रिकाल है. जैसे उग्र आनंदके जुलेमें जुले उसका बाह्य विंग तो अेक जिनेन्द्र नग्न द्विगंबर होता है. समजमें आया? जिन इपी. जिनको जैसे वस्त्र आदि नहीं होते, वैसे मुनिको वस्त्रका अेक धागा भी नहीं होता. समजमें आया?

‘मध्यम च मति श्रुतं’. मध्यम विंग शास्त्रमें कहा हुआ, श्रावकका विंग है. समजमें आया? वह पांचवेकी बात है. छद्म, पांचवा और चौथा जैसे लिया है. समजमें आया? छद्म मुनिका विंग. अंतरमें चारित्र है, आनंद है. छद्मे-सातवें गुणस्थानमें जुलते हैं. सख्ये मुनि हैं तो क्षणमें छद्म, क्षणमें सप्तम, क्षणमें छद्म और क्षणमें सप्तम (आता है). ऐसी मुनिकी दशा होती है. वह नग्न हो जाता है. सहज जडकी दशा हो जाती है, करना पडता नहीं. कर्ता नहीं है. अेक विंग भगवानके शास्त्रमें मुनिका यह गिना है. दूसरा विंग श्रावकका. शास्त्रमें कहा, मध्यम श्रावकका विंग है. कलो, समजमें आया? रत्नत्रय साधनकी अपेक्षासे यह बात की है, भाई! जैसे तो तीन विंग यहां कहे हैं. ... जहां निश्चयमें उतारा है न. यहां तो ऐसा कहा, साधुका विंग अेक, अेक क्षुद्रक आदिका विंग, अेक अर्बिकाका. तीन विंग बाह्य. यहां अंतर ध्यानमें उतारा है. छद्म, पांचवा और चौथा. समजमें आया?

छद्म गुणस्थान.. महा मुनि संत वनवासी. जंगलमें आत्माका.. सर्वज्ञने कहा ऐसा सम्यग्दर्शन प्राप्त करके चारित्रकी रमणतामें जुलते हैं, उसका अेक द्विगंबर जिन विंग (था). जिन विंग कलो या द्विगंबर विंग कलो, जिन द्विगंबर थे. जिनको कोई वस्त्र आदि था नहीं. वीतराग त्रिलोकनाथ परमात्मा बिराजते हैं नग्न. दूसरा श्रावकका विंग है. पंचम गुणस्थानवाला. समजमें आया? ये अंदरमें भावविंगकी बात कहते हैं. पंचम गुणस्थानकी दशा मध्यम विंग है. छद्मे-सातवेकी दशा उत्कृष्ट विंग है. यहां अंदर भावविंगकी बात है, हां! ओहो..!

जघन्य विंग ‘तत्त्व सार्धं’. तत्त्वबोध सहित. देओ! ‘तत्त्व सार्धं’ है न? है कि नहीं? ‘उत्तम जिन रुचि च, मध्यम च मति श्रुतं। जघन्य तत्त्व सार्धं’. सम्यग्दृष्टि नौ तत्त्वका यथार्थ बोध रहते हैं. समजमें आया? जडका जड भावसे, रागका राग भावसे, पुण्यको पुण्य भावसे, पापको पाप भावसे, आत्माको आत्मभावसे, आत्माका आश्रय करके संवर, निर्जरा शुद्धिकी वृद्धि हुई वह संवर, निर्जरा भाव है. ‘तत्त्व सार्धं’. जिनका तत्त्वार्थ श्रद्धानं-तत्त्वकी ‘सार्धं’ श्रद्धा है, वह अविरत सम्यग्दृष्टि है. समजमें आया? अकेला तत्त्व नहीं है, तत्त्व नौ है. नौ तत्त्वकी यथार्थ भान सहित सम्यग्दृष्टि है, अविरत सम्यग्दृष्टि है, अंतरमें अविरतपनेका त्याग नहीं हुआ है. समजमें आया? फिर भी वह भगवानके

शासनमें ऋधन्य भावविंगमें गिननेमें आया (है). समझमें आया? ओहो..!

‘लिंगं त्रिविधि प्रोक्तं’. भगवानके आगममें, त्रिलोकनाथके शासनमें वीतराग क्या है, भगवान परमात्मा. समझमें आया? प्रसिद्ध प्रसिद्ध टिमागमें आ गया. प्रसिद्ध सिद्ध है न? प्रसिद्ध सिद्ध. ... परमात्मा सर्वज्ञदेव त्रिलोकनाथ ...अनादिसे तीर्थकर है. अनादिसे होते आये हैं और अभी अनंत काल होंगे. जैसे भगवानके शासनमें तीन प्रकारके विंग कहे गये हैं. चौथा विंग नहीं कहा गया है. बाह्य क्रियाकांड है, रागको धर्म मानते हैं, पुण्यको धर्म मानते हैं, बाह्यका बाह्य विंग है वह चौथा विंग है, ऐसा है नहीं. ऐसा कहते हैं. समझमें आया? बाह्य द्रव्यविंग धारण किया नत्र मुनिका, श्रावकका बारह व्रतका विकल्प धारण किया हो. चौथा विंग शास्त्रमें है ही नहीं. सम्यग्दर्शनका पहला विंग, पंचमका दूसरा और छठेका तीसरा. जैसे तीन विंग वीतरागके आगममें कहे हैं. समझमें आया? ये तीनका भान नहीं और अकेली क्रियाकांड, व्यवहार दया, दान, ब्रह्मचर्य व्रत, नियमका विकल्प और नत्रपनासे बाह्य त्याग, वह चौथे विंगमें है ऐसा है नहीं. वह विंग ही नहीं है. समझमें आया? बाहर .. उतारा है, ये अंतरमें उतारा है. कोई जैसे नहीं ले जाये कि हम श्रावक है, हम व्रत पावते हैं इसलिये हम भी आते हैं. नहीं.

सम्यग्दृष्टि अविरत होनेपर भी भावविंग अंतर अनुभवमें है वह ऋधन्य विंग है. उससे आगे बढ़कर ध्यानादिमें विशेष गति अंतरमें कुछ है, दूसरे कषायका नाश हुआ है. चौथेमें अनंतानुबंधी कषायका नाश हुआ है. दूसरे अप्रत्याभ्यासका नाश हुआ है. तीसरेमें प्रत्याभ्यासका नाश हुआ है. नाश तो हुआ, लेकिन अस्तिमें स्वप्नकी लीनताकी उग्रता कुछ है. समझमें आया? नाश हुआ वह तो नास्तिक कहा. लेकिन स्वप्नकी स्थिरताकी उग्रतामें भुबुद्ध बढ़ गया है. वह तीन विंग जिनशासनमें गिननेमें आये हैं.

‘चतुर्थं लिंगं न उच्यते’ भगवान त्रिलोकनाथ जैन परमेश्वरके मार्गमें सम्यग्दृष्टि बिना, पंचम गुणस्थान बिना, छठे भावविंग बिना किसीको मुनि अथवा श्रावकका विंग कहनेमें आया है, ऐसा है नहीं. कठिन भाई! समझमें आया? ये श्रावकाचारका अर्थ चलता है. नहीं तो वह आगे ले जाये. यहां तो अविरत सम्यग्दृष्टिका पाठ है. आहो..! समझमें आया? ‘जिन शासने प्रोक्तं’ अधिक वजन दिया. उसमें कहा था, ‘जिनागमे’. ‘जिनागमे’. आगममें ऐसा कहा है. फिरसे कहते हैं, ‘जिन शासने प्रोक्तं’. सर्वज्ञ भगवानके शासनमें तो ऐसे विंग गिननेमें आया है. समझमें आया? ओहो..! हम व्रत तो पावते हैं न, ब्रह्मचर्य शरीरसे पावते हैं न, यौविलार तो ठीक करते हैं न, बाह्यसे त्याग किया है तो हमारा तीन विंगमेंसे चौथा (विंग) रहता है कि नहीं? गाथामेंसे अर्थ (चलता) है.

मुमक्षु :- ..

उत्तर :- स्थान ही नहीं है, कितना क्या? इसलिये तो ये तीन बोल लिये हैं. ‘लिंगं

त्रिविधि प्रोक्तं, चतुर्थ लिंग न उच्यते'. जिनशासनमें जैनशासनमें यौथा लिंग जगतमें है ही नहीं. अकेला दया, दान, व्रत, भक्ति, तप, जपका विकल्प और उसमें अपना धर्म मानता है, हम जैनमें हैं (ऐसा मानते हैं). नहीं. जैनशासन जिनशासनमें उसको लिंग ही नहीं कहा है. वह कुलिंग है. कुलिंगका अर्थ-देहका कुलिंग नहीं. देहमें लवे वस्त्र-पात्र छूट गये हो. समझमें आया? लेकिन विकल्प दया, दान, पंच महाव्रतके विकल्पमें रुक गया और वही मेरा धर्म है, वहां रहा है, उसको यहां कुलिंगी कहते हैं. ओहोहो..! कपडे छोड दिये और नहीं छोडे हैं तो कुलिंगी है, ऐसी यहां बात नहीं करते. कपडे छूट गये हो, अष्टाईस मूलगुण पावता हो विकल्पसे, समझमें आया? पंच महाव्रत, बारह व्रत (पावता हो), लेकिन आत्मा अंतर विकल्पसे भिन्न है ऐसी दृष्टि अनुभव हुआ नहीं, सम्यक् हुआ नहीं (तो) पंचम नहीं, छद्म नहीं है. उस यौथे लिंगको कुलिंग कहते हैं. लिंगमें गिननेमें, जैनशासनमें गिननेमें नहीं आया है. अन्य शासनमें तो है नहीं, धर्म है ही नहीं. तीन काव तीन लोकमें दूसरेमें बात नहीं होती. याहे नञ साधु हो, जंगलमें रहता हो, नञ (लोक) जंगलमें रहता हो. हमने देभे हैं बहुत. समझे? जंगलमें नञ (रहे). क्या है? मूढ है.

जिनलिंग नञ हो और फिर भी पंच महाव्रत और अष्टाईस मूलगुणका राग हो, तो भी लिंग नहीं है, ऐसा कहा है. निश्चय अधिकार कहते हैं न. निश्चय अधिकारकी शैली ... है. समझमें आया? अष्टाईस मूलगुण पावे, नञ रहे, ... क्षुब्ध रहे,...

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- नहीं, नहीं. वह यीज ही नहीं है. वह यीज ही नहीं है, लिंग ही नहीं है. समझमें आया? लंगोटी लगाकर क्षुब्ध हो गया, और क्या कहते हैं? अक्षक, अक्षक. अक्षक होते हैं न?

अपना आत्मा अके समयमें अजंडानंद प्रभु, अनंत गुणराशि ऐसा द्रव्य, ऐसी शक्तियां ऐसी अंतरमें प्रतीत, अनुभव सम्यग्दर्शन बिना जैसे लिंगको जैनशासनमें कोई लिंगमें गिननेमें नहीं आया है. लिंग कहां कि सत्य कहां. असत्यमें, कुलिंगमें गिननेमें आया है. आलाला..! बोच कराते हो. ... लेकिन अंतर राग, पुण्य, देहकी क्रियासे मुझे लाभ होगा, हम दूसरेसे तो निवृत्त हुआ हैं न, नहीं? सेठ! दुकानमें धंधा करते थे, ङवचंद्रसे, पुत्रसे निवृत्त हुआ हूं, जैसे तो मैं विशेष हूं, ऐसा मान ले... समझमें आया? लैया! नहीं, वह नहीं, वह नहीं. वह लिंगमें ही नहीं है. आलाला..! कडक बात लगती है, हां! तारणस्वामीकी. बाह्य संप्रदायवालोंको ठसके साथ मेव जाये ऐसा नहीं है. पंडित तो ना ही कहते हैं, अभी के पढे हुआ. अरे..! सुन न.

ये तो निश्चयकी यथार्थ दृष्टि सहितका लिंग, लिंग. व्यवहार हो तो लवे हो. अष्टाईस मूलगुण आदि, बारह व्रतका विकल्प आदि हो, उसकी कौन ना कहता है? लेकिन वह यथार्थ

विंग नली है, सत्य विंग तो यली है. आला..! समजमें आया? ध्यान रभना. गाथाका औसा अर्थ हुआ है. .. यलां उतरता है कि नली?

चौथा विंग नली कला गया है. विशेषकरके जिनशासनमें सम्यज्दृष्टिका कला गया है. देओ! सम्यज्दृष्टिका विशेषकरके यली.. है न? 'सम्यग्दृष्टि विशेषतः' सम्यज्दृष्टि विशेषपने वली विंग शास्त्र कलनेमें आया है. भगवानके शासनमें, त्रिलोकनाथके शासनमें, गणधरके शासनमें. ओलो..! ... तुजे भाव नली है, तू है ली नली, कोठ विंगमें नली है. सेठ! कडक है यलां. तारुणस्वामी कडक हुआ है जंगलमें. यथार्थ कला है, वल यथार्थ कला है. कुंठकुंठ्याचार्य औसा ली कलते हैं, नली. अकेला व्यवहार क्रियाकांड करनेवाला तुम धर्ममें गिननेमें आता है, बिलकूल नली. मूढ, अज्ञानी मूढ है. औसा कला है. अज्ञानी मूढ. पंडित लोग तो औसा सुनकर तो औसा ली कलेंगे कि, ये निश्चयाभासी है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- .. वल तो व्यवहारको बताया है. निश्चय है तो व्यवहार बताया है. समजमें आया? ये निश्चयसे बात ली है. चौथे, पांचवे, छठेको ली विंग कलते हैं. विकल्प आदिमें विंग नली है. व्यवहार विंग लो, निश्चय लो तो. परंतु निश्चय बिनाका अकेला बाह्य भेष धारण करे, औसा श्रावका, मुनिका, क्षुद्रकका, अक्षकका, नग्नपना (धारण करे), भगवानके शासनमें जिनागममें तारुणस्वामी कलते हैं, हमारे कथनमें, हमारा जैनशासनका कथन है, हमारे धरका नली. हमारे सभी शास्त्रमें ली चौथा विंग जिनाशासनमें नली है तो हम ली चौथा विंग कलते नली. कलो, पंडितज! ये तो शब्दका अर्थ होता है. समजमें आया? ... समजे? ... १८८ आयी. ..

जघन्य अव्रतं नामं, जिन उक्तं जिनागमं।

सार्थं ज्ञानमयं सुद्धं, दस अष्ट क्रिया संजुतं।।१९८।।

देओ भाषा! जिन जिन जिन.. (अज्ञानी कलता है), भगवान भगवानका जाने. हम हमारा. जघन्य विंगका पात्र अविरत सम्यज्दृष्टि है. जो 'जिन उक्तं'. जिनेन्द्रने कला हुआ, जिनागम अनुसार. 'सार्थं' है न? 'ज्ञानमयं सुद्धं'. ज्ञानमय शुद्ध आत्माका अनुभव करता है. ज्ञानमय शुद्ध आत्माका अनुभव करता है. समजमें आया? वल अठारह क्रिया सहित होता है. नाम पीछे है. समजमें आया? उसकी १८ क्रिया होती है. चौथे गुणस्थानसे १८ क्रिया होती है. पीछे व्यवहार लिया. देओ! कैसी कथनकी पद्धति है! निश्चय लिया. चौथा विंग नली है. चौथा गुणस्थान, पंचम गुणस्थान.. तीन विंग. और तीन विंगमें 'जिन उक्तं'में ये क्रिया होती है. दस अष्ट-१८. १८में कुछ शुद्ध है, कुछ विकल्पकी बात है. औसा निश्चय लो तो उसको व्यवहार कलनेमें आता है. निश्चय सहितका व्यवहार लिया है. समजमें आया? उसकी बात विशेष लेंगे... (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)